



Hargharpanditji

॥ श्री परमा एकादशी व्रत कथा ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री परमा एकादशी व्रत कथा ॥

अधिक (पुरुषोत्तम) मास के कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी अत्यंत पुण्यदायिनी मानी गई है। यह एकादशी केवल अधिक मास में ही आती है। इसका माहात्म्य स्कन्द पुराण के पुरुषोत्तम माहात्म्य में वर्णित है। इस व्रत के प्रभाव से दरिद्रता, पाप और दुःखों का नाश होता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

श्री परमा एकादशी व्रत कथा

एक समय धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—

"हे जनार्दन! अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का क्या नाम है? कृपया उसका माहात्म्य और व्रत कथा सुनाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण बोले—

"हे धर्मराज! अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी 'परमा एकादशी' कहलाती है। इसका व्रत सभी पापों का नाश करने वाला और महान पुण्य प्रदान करने वाला है। अब इसकी पवित्र कथा सुनो।"

प्राचीन समय में कम्पिल्य नामक नगर में सुमेध नाम के एक निर्धन ब्राह्मण अपनी धर्मपत्नी पवित्रा के साथ रहते थे। दोनों भगवान श्रीहरि विष्णु के परम भक्त थे। वे सदाचारी, सत्यवादी और संतोषी थे, परंतु अत्यंत गरीबी में जीवन व्यतीत कर रहे थे।

ब्राह्मण सुमेध भिक्षा माँगकर जैसे-तैसे जीवनयापन करते थे। कई बार उन्हें स्वयं भूखे रहना पड़ता था, फिर भी उनकी पत्नी पवित्रा कभी शिकायत नहीं करती थी। वह अपने पति की सेवा और भगवान की भक्ति में सदैव लगी रहती थी।

एक दिन महर्षि कौण्डिन्य उनके घर पधारे। निर्धन होने पर भी सुमेध और पवित्रा ने उनका यथाशक्ति आदर-सत्कार किया।

उनकी सेवा और श्रद्धा से प्रसन्न होकर महर्षि कौण्डिन्य ने पूछा—

"वत्स! तुम दोनों इतने दुःखी क्यों हो?"

सुमेध ने विनम्रतापूर्वक अपनी दरिद्रता का कारण बताया और कहा—
"हे गुरुदेव! कृपया ऐसा कोई उपाय बताइए जिससे हमारा जीवन सुधर जाए और भगवान की कृपा प्राप्त हो।"

महर्षि कौण्डिन्य ने कहा—

"अधिक मास के कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी का श्रद्धा और नियमपूर्वक व्रत करो। भगवान श्रीहरि विष्णु की उपासना करो, रात्रि-जागरण करो और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सभी दुःख दूर हो जाएँगे।"

सुमेध और पवित्रा ने महर्षि की आज्ञा का पालन किया। उन्होंने पूर्ण श्रद्धा, भक्ति और नियम के साथ परमा एकादशी का व्रत किया। भगवान विष्णु की पूजा की, नाम-जप किया, रात्रि-जागरण किया और द्वादशी के दिन ब्राह्मणों को दान देकर व्रत का पारण किया।

व्रत के पुण्य-प्रभाव से कुछ ही समय में उनकी दरिद्रता दूर हो गई। उन्हें धन, अन्न, सुख और सम्मान की प्राप्ति हुई। उन्होंने अपना जीवन धर्म, दान और भगवान की सेवा में समर्पित कर दिया।

अंत समय में भगवान श्रीहरि विष्णु के पार्षद दिव्य विमान लेकर आए और सुमेध तथा पवित्रा दोनों को वैकुण्ठ धाम ले गए।

तब भगवान श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा—

"हे राजन्! जो श्रद्धा और नियमपूर्वक परमा एकादशी का व्रत करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं, दरिद्रता और कष्ट दूर होते हैं तथा अंत में वह मेरे परम धाम वैकुण्ठ को प्राप्त करता है।"

परमा एकादशी का महत्व

यह एकादशी केवल अधिक (पुरुषोत्तम) मास में आती है।
भगवान पुरुषोत्तम श्रीविष्णु की विशेष पूजा का विधान है

इस दिन जप, दान, विष्णु सहस्रनाम का पाठ, गीता-पाठ और रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है।

यह व्रत दरिद्रता, पाप और मानसिक कष्टों से मुक्ति दिलाने वाला माना गया है।

कथा का संदेश

सच्ची श्रद्धा, संतोष और ईश्वर-भक्ति से कठिन परिस्थितियाँ भी बदल सकती हैं।

अतिथि-सत्कार, सेवा और दान भगवान को अत्यंत प्रिय हैं।

अधिक मास में किए गए व्रत, जप और दान का फल अनेक गुना बढ़ जाता है।

भगवान श्रीहरि अपने सच्चे भक्तों की रक्षा और पालन अवश्य करते हैं।

परमा एकादशी व्रत का फल

जो श्रद्धालु अधिक मास के कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी का श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर भगवान पुरुषोत्तम श्रीहरि विष्णु की पूजा करता है, उसके समस्त पाप नष्ट होते हैं, दरिद्रता दूर होती है, सुख-समृद्धि, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है तथा अंत में भगवान विष्णु के परम धाम वैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

॥ श्री विष्णवे नमः ॥

॥ श्री परमा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥